

Time to weed Out Fanatics and Radicals Amongst Us

June 13, 2022 | New Delhi | www.impar.in

I was reading an article by the noted journalist, Qamar Waheed Naqvi in the Satya Hindi.com, which is a compilation of a series of his recent tweets. I could not agree more with his views that what was needed to be done is exactly opposite to what we have been doing all these years. Cursing communal politics and parties and yet doing everything possible to unknowingly strengthening them. The lack of long term political plans, absence of competent and committed leadership and dependence on weak, corrupt and casteist leaders in the name of secularism on one side and hypothecating our understanding of religion to semi-literate and narrow vision clergy on the other hand costed us dearly.

Time is fast changing. An impression is being created that Muslims are misfit to live in multicultural societies. And they neither want to live in peace nor let live. We may keep on complaining about what right wing people and others are doing, but there are no takers. The narrow world vision and low on morality and spirituality and high on ritualism has almost blinded a large section of the Muslim community in India. Otherwise how would one justify violence all of a sudden, almost two weeks after the telecast? Its time for the vast majority of moderates to stand up and speak against 5% fringe elements in both communities. We must not go soft on the fundamentals and fanatics, fearing their vituperative and aggressive attacks in social media.

We need strong social leadership which could talk sense and act sensibly. The champions of hysterical speeches, these misguided mullahs can only deliver disaster. Indian Muslims have faced enough under this regressive religious leadership and mushroomed socio-cultural organisations. It's time to change. Time to call for weeding out radicals among us, whether they defame us on TV screens or create trouble in the society. The world is no longer willing to buy our victimhood theories. What happened in recent days can not be justified in the name of 'hurt sentiments'.

We are fast loosing sympathy in the society and will soon be left with no sympathisers. What are these great theological institutions and their proclaimed leaders doing today? Are these leaders only to collect zakat funds in the name of Madarsa? Do they have no responsibility towards poor Muslim, who is paying hefty price to the nonsense of these leaders, who would ignite fire and then go in hibernation? Only to emerge later, when situation cools down, to distributing little ration and issuing press statements or getting photographed for media?

Should we privileged 5% not feel ashamed for the trouble we are creating for 95% helpless poor Muslim on the ground by our misplaced actions and statements? This is critical time and we must read the bold writings on the wall and act sensibly and urgently, before it's too late.

Dr. MJ Khan

President, IMPAR

+91-9569997890

mjkhan@impar.in

हमारे बीच के कट्टरपंथियों को बाहर निकालने का समय

13 जून 2022, नई दिल्ली | www.impar.in

मैं सत्य हिंदी डॉट कॉम में प्रसिद्ध पत्रकार कमर वहीद नकवी का एक लेख पढ़ रहा था, जो उनके हालिया ट्वीट्स की एक श्रृंखला का संकलन है। मैं उनके विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ कि मुस्लिम समाज को जो करने की आवश्यकता थी हम उसके ठीक विपरीत अभी तक करते आये हैं। सांप्रदायिक राजनीति और सांप्रदायिक पार्टियों को कोसना और फिर भी जानकार या अहमकाना हरकतों से उन्हें ही मजबूत करने के लिए अब तक कार्य करते रहे हैं। दीर्घकालिक राजनीतिक योजनाओं की कमी, सक्षम और प्रतिबद्ध नेतृत्व की अनुपस्थिति और कमजोर, भ्रष्ट और जातिवादी नेताओं पर एक तरफ धर्मनिरपेक्षता के नाम पर निर्भरता और दूसरी ओर धर्म की हमारी समझ को अर्ध-साक्षर और संकीर्ण दृष्टि वाले मौलवियों को गिरवी रखना काफी महंगा पड़ा है।

समय तेजी से बदल रहा है। यह धारणा बनती जा रही है कि मुसलमान बहुसांस्कृतिक समाज में रहने के लायक नहीं हैं। दक्षिणपंथी लोग या दूसरे क्या कर रहे हैं, इस लिए हम भी वैसा कर सकते हैं, हमारे इस तर्क को बाजार में अब कोई लेने वाला नहीं है। हमारे उलेमा की संकीर्ण विश्वदृष्टि और आध्यात्मिकता से ज्यादा कर्मकांड पर भारत के मुसलमानों को चला कर समुदाय के एक बड़े हिस्से को लगभग अंधा कर दिया है। नहीं तो टीवी डिबेट के लगभग दो हफ्ते बाद अचानक हुई हिंसा को कैसे जायज ठहराया जा सकता है? नरमपंथियों के विशाल बहुमत के लिए समय आ गया है कि वे दोनों समुदायों के 5% कट्टरपंथी तत्वों के खिलाफ खड़े हों। सोशल मीडिया में अपशब्दों और आक्रामक हमलों के डर से हमें धार्मिक उन्मादियों और कट्टरपंथियों पर नो तो चुप्पी मारनी चाहिए न ही नरम होना चाहिए।

हमें मजबूत सामाजिक नेतृत्व विकसित करने की जरूरत है जो समझदारी से बात कर सके और समझदारी से काम ले सके। उन्मादी भाषणों के हिमायती ये गुमराह मुल्ला तबाही ही मचा सकते हैं। भारतीय मुसलमानों ने इस संकीर्ण सौच के धार्मिक नेतृत्व के तहत काफी कुछ झेला है और हमारे बड़े बड़े इंदारों ने भी सिर्फ गुमराह और अंध भक्त बनाने का ही काम किया है। इसे बदलने के लिए समय आ गया है। हमारे बीच कट्टरपंथियों को बाहर निकालने का आह्वान करने का समय, चाहे वे हमें टीवी स्क्रीन पर बदनाम करने वाले स्वम्भू नेता और मौलवी हों या समाज में फसाद फैलाने और दुश्चारी पैदा करने वाले ठेकेदार। दुनिया अब हमारी मजलूमियत की कहानी को खरीदने को तैयार नहीं है। हाल के दिनों में जो हिंसा हुई उसे 'भावनाओं को ठेस पहुंचाने' के नाम पर जायज नहीं ठहराया जा सकता।

हम समाज में तेजी से सहानुभूति खो रहे हैं और यदि सिलसिला ऐसा ही चलता रहा तो जल्द ही हम बचे हुए हमदर्दों को भी खो देंगे। ये बड़े बड़े धार्मिक इंदारे और संगठन और उनके घोषित नेता आज क्या कर रहे हैं? क्या ये नेता सिर्फ मंदरसे के नाम पर जकात जमा करने के लिए हैं? क्या इन नेताओं की मूर्खता की भारी कीमत चुकाने वाले गरीब मुसलमान के प्रति उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं है, जो आग लगाकर सोने चले जाते हैं? और बाद में जब स्थिति शांत हो जाती है तो प्रेस बयान जारी करने या मीडिया में फोटो खिंचवाने के लिए हाज़िर हो जाते हैं?

क्या हम 5% विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को अपने गलत कार्यों और बयानों से जमीन पर 95% असहाय गरीब मुसलमानों के लिए पैदा की जा रही परेशानी के लिए शर्म नहीं करनी चाहिए? यह महत्वपूर्ण समय है और इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, हमें दीवार पर साफ़ साफ़ लिखे को पढ़ना चाहिए और समझदारी के साथ तत्काल बदलाव के लिए कदम उठाने चाहिए।

डॉक्टर एमजे खान

अध्यक्ष, इम्पार

+91-9569997890

mjkhan@impar.in

Indian Muslims for Progress and Reforms

306 , Rohit House, Tolstoy Road, New Delhi - 110001

Email: info@impar.in, Contact No: 011-43595456, Fax No: 011-23731130

U74999DL2015NPL281054 | Website: www.impar.in